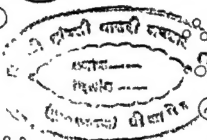


सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर

मत बाँधो

मंगत बादल



अनुक्रम

भविष्य के खिलाफ
उनकी अदालत में
तुम्हें स्वप्न हृता के रूप में
आना पड़ेगा,
और इतिहास
जब जवाब मांगेगा
तो एक-एक सपने का
हिसाब चुकाना पड़ेगा. .

-मत बाँधो आकाश

कटे हाथों का विद्रोह

व्यवस्था की
हर पीढ़ी का दास
मैं तुम्हारे आस-पास
अपनी आँखों से
(जो हमेशा तुम्हारी राहों मे
बिछी रहती हैं)

देखता रहा
स्वतन्त्रता का उत्सव
सुनता रहा
ओजस्वी भाषण
मेरा नपुसक व्यक्तित्व
माइक से निकला
शब्द ब्रह्म
आश्वासनों के
निराकार स्वरूप को
व्याख्यायित करता रहा
मेरे हृदय मे
उत्साह भरता रहा
जब तक मैं कुछ समझता
राजनीति की टेढ़ी गलियाँ
पार करते हुये
तुम पहुँच चुके थे
सत्ता के गाँव मे

कुर्सी की छांव मे
मैं ने देखा—
वह मत-पत्र
जो मेरे लिए
महज रद्दी का टुकड़ा था
तुम्हारा सुनहला
वर्तमान बन कर
मेरे भविष्य पर
कालिख पोत रहा है
प्रजातंत्र का खेत जोत रहा है।
मेरे हाथ जो,
चुनाव चिह्न पर
निशान लगाते हुए
पोलिंग बूथ मे रह गए थे
तुम उन्हें अब
तालियों के लिये
प्रयोग कर रहे हो
मेरे विरोध के बावजूद
वे जुट रहे है
मैं जानता हूँ
अब तुम्हें मेरी दरकार नही
क्योंकि मेरे कटे हाथ
तुम्हारे पास हैं।

विकल्प की तलाश

अब मैं तुम्हारे साथ
किसी गलीज़ बहस मे
भाग नहीं लूँगा
क्योंकि तुमने
जिन सिद्धान्तो की
बुनियाद रखी थी
वे तुम्हारी
नाजायज औलाद की भाँति
बडे हो गए हैं
और आज
तुम्हारे यथार्थ और स्वार्थ के बीच
खडे हो गए हैं
तुम्हारे विरोध मे ।
अब मैं बोलूँगा भी क्या
इस अन्तहीन लडाई के
सिलसिले मे ?
जिसमे मेरी विवशता
कैद है तुम्हारी मुठ्ठी मे
इसलिये मेरा परिचय
तुम्हारा शब्द-शब्द मोहताज है
जो कल नही था,
पर आज है
तुम्हारा यूक्लिपट्स व्यक्तित्व

मेरा शोषण कर
मुझे बौना बना रहा है
मेरी ईमान दारी को
अपने हाथों का
खिलौना बना रहा है
हालांकि हम एक साथ उगे थे
लेकिन तुम्हारा फैलाव
मेरे अस्तित्व पर
प्रश्न चिह्न लगा रहा है
फिर भी मैं निराश नहीं हूँ
क्यों कि वह
मेरे भीतर बारूद सुलगा रहा है
जो विस्फोट करेगा।
वह जो करेगा
छुप-छुप कर नही
बल्कि डंके की चोट करेगा।

बच्चे-१

उन के कंधो पर बस्ते है
और हाथो में तख्तियाँ
वे स्कूल जा रहे हैं
वर्तमान से आश्वस्त
अनागत से अनजान वे
वहाँ पढ़ेंगे पहाड़ा-पट्टी
या इकाई-दहाई-सैकड़ा-हज़ार
सिद्धान्त और व्यवहार मे
अन्तर न करते हुए वे
अपनी कोरी स्लेटो पर
लिखेंगे आस्था
अपनी अछूती भावनाओ से
वे देखना चाहेगे
हर एक वस्तु की असलियत
धीरे-धीरे वे
नाप रहे हैं
सत्य और सत्य के बीच का फासला
उन के सहज विश्वासी मन को
खड़ा किया जा रहा है
भाषा की पंक्तियो
और धर्म की कवाइद मे
साधते हुए उन्हें
विवश किया जा रहा है

समझदार बनने के लिए
जबकि स्वयं के विषय में
उन्हें कोई गलत फहमी नही है
फिर भी
उन के बचपन को चुनौती देकर
दबाया जा रहा है
इस दबाव के परिवेश मे
वे जी रहे हैं एक भय
जो उन्हे बडो से है
कि उन्हे बच्चा नही रहने दिया जा रहा
इसलिये वह भय
उनमे
उनके कद के साथ
बढ रहा है धीरे-धीरे
कि वे अपना बचपन खो रहे हैं
और असमय ही बडे हो रहे है।

बच्चे-२

बच्चे बड़े हो रहे हैं
अपने कमज़ोर पाँवों के बावजूद वे
आधार ढूंढ-ढूंढ कर
खड़े हो रहे हैं
वे समझ चुके हैं
कि उनकी स्लेटों पर
ईमानदारी, सत्य, निष्ठा
और कर्तव्य
तथा कृष्ण, गौतम और गांधी के
जो हिज्जे लिखवाये गए थे
वे गलत थे
गलत थी वह इबारत
जो उन्हें रटने को दी गई थी।
जो सही है
उसे वे जी रहे हैं
जोड़-बाकी सीखने के बाद
जब सुविधाएँ तक़सीम हुईं
तो उनके हिस्से 'शेष' आया
जो शून्य था
जो न उन्हें रोटी दे सकता था
और न ही ऐसी जिन्दगी
जिसमें उन्हें
अपमान न सहन करना पड़े

अब जो उनके कंधों पर झोले हैं
उन में हथगोले हैं
आप इस गलत फहमी में न रहें
कि उन में पुस्तकें होंगी
ज्ञान की, विज्ञान की
अथवा प्रमाण-पत्र या सिफारशी चिट्ठियाँ।
उनका आक्रोश
जो उनके कद से बड़ा हो गया है
हवा में मुट्ठियाँ तानकर
इन्कलाब ! जिन्दाबाद ! की
तख्तियां लेकर खड़ा हो गया है।
वे अब रुक नहीं सकते
भूत से पीड़ित
प्रताड़ित वर्तमान से
भविष्य के धूमिल पृष्ठ पर
लिख देना चाहते हैं विद्रोह
जिसकी स्याही के लिये
उन्हों ने खून का रंग चुना है।

संधि-पत्र का स्वाद

आदमी हो तुम.........
तो आदमी की तरह जीना सीखो
विज्ञापनों का अखबार
या इश्तिहार बनकर
जीने के साधन जुटाओगे
तो समय आने पर
बासी समझ
रद्दी की टोकरी में
फेंक दिये जाओगे
जला दिये जाओगे
कूड़े के ढेर मे
कूडे के साथ
ये तुम्हारी विवशता तो नही
कि तुम अपनी नियति के
संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करो !
हां ! यदि स्वत्व के बदले मे
सुविधाओं का सौदा
स्वीकार करोगे
तो तुम भी
उन लोगो की मौत मरोगे
जिनकी जुबान पर
संधियों के ताले हैं
और आत्मा के टुकड़े

विज्ञापन दाता गिद्धो ने
तिल-तिल नोच डाले हैं

अपनी कीमत लग चुकने के बाद
उनका कोई चारा नही चलता
वे बेचारे होते हैं
और चोर की माँ की तरह
शेष जिन्दगी
भीतर ही भीतर
घुट-घुट कर रोते हैं।

वे, तुम और कविता

वे,
जब भाषण दे रहे थे
तुम तालियाँ पीट रहे थे
तुम्हारे संवाद मे
गूँगे और बहरो का
सम्बन्ध था ।
यही से शुरु होती थी
कविता की भूमिका
कि वह इस जडता को तोड़े
लेकिन उस पर
प्रतिबन्ध था
यहाँ एक पुल
बन सकता था
तुम्हारे, उनके और कवि के बीच
उन तमाम सामान्यताओ को
जोड़ते हुए
जो आदमी को आदमियत के
धरातल पर खड़ा करती हैं
उसे उसके कद से बडा करती है
लेकिन कलम की आँख से
देखती हुई कविता
तरसती रही
तुम्हारे सम्पर्क के लिए
उन समस्त

सम्भावनाओं के बावजूद
जो तुम्हारे लिये
नए रास्ते खोजती थी
और
उनके वजूद को तोलती थी
फिर भी तुम खामोश रहे
जब कविता रो रही थी
तुम्हारा दर्द ढो रही थी
उस समय तुम
उनके जुलूस में
उत्तेजनापूर्ण नारे लगा रहे थे
इसीलिए उनकी गलतफहमी
कि कविता की तुम्हें या उन्हें
क्या दरकार है ।

ये, वे लोग हैं

आइये ! पधारिये !
लगता है आपको कहीं देखा है।
हम पहले भी मिले हैं।
हाँ ! हाँ ! याद आया
आप तो हमारे विधायक थे
शायद चुनावी दौरे पर निकले हैं

माफ करना !
मैं आपको पहचान नहीं पाया था
क्योंकि पिछली बार
जब आपको [illegible] था
तब आप कमज़ोर से थे
आपका व्यक्तित्व
इस तरह नहीं खिला था
ख़ैर ! छोड़िए
आइए ! आपको लोगों से मिलवाऊँ
आपका परिचय करवाऊँ
इधर देखिए !
ये सामने, जो [illegible] रहे हैं
ये वे लोग हैं
इतिहास के [illegible] जिन्होंने [illegible] हैं
ये कुछ नहीं [illegible]
कुछ [illegible] करते हैं

आप ही की तरह
वे इनकी जुबान कील गये हैं
वैसे वाणी की इन्हे
जरूरत ही नही है
क्योंकि ये जब भी मुँह खोलते हैं
तो भाव व्यक्त करते हुए भी
अभाव की भाषा बोलते हैं
उस समय इनका समूचा अस्तित्व
रोटी बन जाता है
जब कि आपके लिये तो
आदमी भी
मांस की बोटी बन जाता है
आप इन्हें मत बुलायें
इनके घर बाढ़ में बह चुके हैं
इन्हे पुन: बसाया जायेगा
ऐसा मन्त्री जी कह चुके हैं।

आइये! आगे आइये
देखिये—
यह हरिजन मुहल्ला
उर्फ पक्का बस्ती है
यहाँ राजनीति रोटी से सस्ती है
लेकिन ये लोग बड़े खतरनाक हैं
पेट पर अधिक बल देते हैं
सिर्फ कम्बल या दारू के बदले में
रास्ता बदल देते हैं
पर आप इनसे मत डरें
क्योंकि आज तक इन्हें
जो बात समझ में आई है
उसका यही मतलब निकलता है
इधर गिरो तो कुआँ
और उधर गिरो तो खाई है।

इसलिये आपके पास ही आयेंगे
नही तो मुंह की खायेंगे
आप बेकार की चिंता मे मत जलें
चलो ! आगे चलें !

अच्छा ! तो आप
ये राख के ढेर देखकर परेशान है
अरे सा'ब !
यहाँ तो एक साम्प्रदायिक दगा हुआ था
जिसमे झोंपडियाँ जल गईं ।
और धरती को फोडकर,
रातो-रात यह इमारत निकल गई ।
ये इधर मैदान मे
जो लोग तम्बुओ के पास खडे हैं
इन से भी दो बातें करलें
आप तो इन्हे सिर्फ
आश्वासन दे देना
ये फिर झोंपडियाँ बना लेंगे
बडे कर्मठ है
बार-बार उजडते हैं
फिर बसते हैं
इन्हें जब से होश आया है
खुद को खाना बदोश पाया है
ये लोग जुबान के बडे सच्चे हैं
इनके पास जो औरतें बैठी हैं
उनकी गोदियो मे
मिट्टी सने, काले-काले
पिल्ले नही, खुद के बच्चे हैं !
कुत्ते !
हाँ सा'ब! कुत्ते इन मरदूदो से
थोडे सभलते हैं
ये तो खुद भी जूठन पर पलते हैं

लेकिन हैं बड़े जीवट के आदमी
बुलडोजर चलें
या झोंपड़ियाँ जलें
इन्हें कब फ़र्क पड़ा है
ये अब तक जीवित हैं ?
ये तर्क सबसे बड़ा है !
और हाँ !
ये आदमी जो भूखा पड़ा है
आप इसके चक्कर में मत आइए
इनके यहाँ तो
पिछले सालों की तरह
इस साल भी सूखा पड़ा है
वैसे आप यदि इनकी
सहायता वगैरह कर जायेंगे
तो ये चुनाव तक जिन्दा रह सकते हैं
वरना ढोर-डगर भूख प्यास से मरे थे
ये भी मर जायेंगे !
इनकी सहायता करना
जरूरी भी है साहब
अन्यथा कोई विरोधी कर जायेगा
और चुनाव की वैतरणी में
आपको मझधार में छोड़कर
खुद पार उतर जायेगा।

ठीक है !
आप कहते हैं,
तो गाँव चलते हैं।
देखिये—
ये वही गाँव है
जहाँ कभी प्रशासन आया था
जिसने लोगों को बताया था
कि बधुआ मजदूर

और हरिजन भी आदमी हैं
इसलिए उन्हें
(सिर्फ कागजों में)
न्याय दिलवाया था।
और ये—
हवलदार थे
जिनसे आपका साक्षात्कार हुआ था
एक तफ्तीश के सिलसिले में आये थे
क्योंकि
यहाँ एक सामूहिक बलात्कार हुआ था
उनका शिकार
कान्हू कुम्हार की बेटी थी
जो रात को तो अपनी माँ के
पास ही लेटी थी
लेकिन सुबह उसकी लाश
गाँव के कुएँ से बरामद हुई
उसकी छाती, चेहरे और जाँघों पर
दाँतों और नाखूनों के निशान थे
ऐसा लोगों का शक है
लेकिन स्पष्ट रूप में
वे ऐसा नहीं कह सकते
क्योंकि पुलिस रिकार्ड
और मेडिकल रिपोर्ट के खिलाफ
उन्हें सोचने का क्या हक है?

आप इन्हें जाने दीजिये
ये तो जाहिल हैं
कानून की भाषा नहीं जानते हैं
सिर्फ आँखों देखे को ही
सच मानते हैं।
ये वे ही लोग हैं
जो इतिहास बनाते हैं

लेकिन ताजपोशी के समय
पीछे रह जाते हैं
इनसे मत डरें
ये लोग अपने हैं
क्योंकि इन्हें आज तक
जो कुछ दिखाया गया है
वे सपने ही सपने हैं
ये जो नारे लगा रहे हैं
इन विरोधी नारों से
मत घबरायें
सीधे मंच पर चले जायें
उनसे माफ़ी माँगें
और आँसू बहायें
मुझे विश्वास है
जनता आपको फिर माफ कर देगी।
और पिछले चुनाव की तरह
इस बार भी
आपके विरोधियों का पत्ता साफ कर देगी।

बाढ़ के इन्तजार में

वे,
हवा के रूख के साथ
बदलना जानते थे
परिवर्तन उनका धर्म था
इसलिए
तेज आँधियों में भी
नहीं टूटे
उनके जीवट के
चर्चे हुए
समारोह आयोजित किए गए
पत्रकारों द्वारा
इण्टरव्यू लिये गये
वे कुछ और झुक गए
हालांकि काईयापन
झलक रहा था
उनकी अतिरिक्त नम्रता में
लेकिन हर कोई
ललक रहा था
जिसके लिए
उनकी उपलब्धियाँ
ज्ञापित की गईं
अब उनके टूटे हुए
पत्ते भी हवाओं से

बातें करने लगे थे
मसीहाई दम भरने लगे थे
उनसे
भय खाना लाजिमी था
क्योंकि हस्तक्षेप
करने लगी थी
उनके रीढ़ की लचक
दूसरों की स्वतन्त्रता में।
लेकिन शायद वे
भूल गए थे
मौसम का मिजाज
कि जब बाढ़ आती है
तो उन सबको बहा ले जाती है
जो झुक जाते हैं
तेज आँधियों से।
फिर वे
नहीं पनपते कभी।
सिर्फ वे ही दरख्त
दुर्धर्ष संघर्ष के
सबूत होते हैं।
जिनकी जड़ें गहरी
और तने मजबूत होते हैं।
क्योंकि इतिहास
हवा के रुख के साथ
बदलने वालों का नहीं होता
इसलिए मुझे
बाढ़ का इन्तजार रहेगा।
जब हर एक दरख्त
अपनी रीढ़ की
कहानी कहेगा।

कविता हमारे भीतर का संस्कार है

इससे पहले कि
हम कविता को समझें
हमें अपनी-अपनी
भूमिकाएँ पहचान लेनी चाहिए
क्यों कि कविता कोई
सिरस्त्राण या कवच नहीं है
और न ही कोई हथियार
जो आपके बचाव में
सहले प्रतिद्वन्द्वी की मार
कविता तो वह समझ है
जो आदमी आदमी के
बीच की दूरी को पाटती है
उन अदृश्य अवरोधों को
जो हमारे हृदयों के बीच हैं
काटती है
वह मात्र शब्दों का खेल
बुद्धि का विलास
या कौतुक भी तो नहीं
जिस पर भाषा के व्यापारी
चमत्कार का मुलम्मा चढ़ाकर
पैदा कर सकें
कविता तो
भावों का भाषा के साथ

एक अनुबंध है
जो अखिल प्राण धारा को
जोड़ता है, वह सम्बन्ध है
मिट्टी की वह ताकत है
जो फूल में गंध है
कविता—
जब धरती को फोड़कर
निकलती है
अंकुर के रूप में
तब वातावरण के
तमाम अवरोधों को सहन करती हुई
जन चेतना का वहन करती हुई
वाणी का सौन्दर्य नहीं
बल्कि हमारे रक्त का
तूफान होती है
उफान होती है
किसी क्रान्ति के सूत्रधार का
इसी लिए मैं कहता हूं
कि कविता को समझने से पहले
हमें अपनी-अपनी
भूमिकाएं पहचान लेनी चाहिए
कि हम फूल की गंध
अंकुर की कोमलता
रक्त की गर्मी
और जन चेतना को
अपने से अलग नहीं कर सकते
चाहे वह भाव है,
या विचार है।
कि कविता,
हमारे भीतर का संस्कार है।

अंधी सभ्यता

मृत चेतना के सभ्य सपूतो !
प्रकृतिवाद के मद से पूर्ण
चूर्ण हो जाएगा
जब तुम्हारा यह घिनौना अस्तित्व
और खोदी जाएगी
तुम्हारी 'काल-पात्री' सभ्यता
तो उससे नई भोर का पुरातत्त्ववेत्ता
तुम्हारा प्रागैतिहासिक हाल लिखेगा
क्या—?
वियतनाम के खण्डहरो से उठती
बारूद की बू मे
जब उसे पूँजीवाद का कंकाल मिलेगा
तो कहेगा वह
यहाँ रहने वाले भेडिये थे
जो बारूद भक्षण करते थे
उनकी सत्ता मे कोई मेमना
अपने स्वत्व की रक्षा नही कर सकता था
चोर बाजारी के काले गोदामों को
वह कोई कबाड़खाना समझेगा
कहेगा—
यहाँ किसी देश की
बिगड़ी हुई अर्थ व्यवस्था
नग्न नाच करती होगी ।

टूटे हुए असेम्बली हॉल के
खंभों पर जब वह
भाषणों की पर्तें
और वायदों के नग्न चित्र पाएगा
कहेगा—
उस प्राचीन सभ्यता के
संचालकों की भाषा
बहकावा थी
जो परिमार्जित, साहित्यिक
और जन भाषा से मेल खाती हुई भी
अलग-थलग थी ।
कारखानों की चिमनियों पर
जमा हुआ
मजदूरों के परिश्रम का धुआँ
जब देखेगा
तो कहेगा—
यहाँ कुछ ऐसा भी था
जिसे मशीनों में पीसकर
पूँजीवाद के अजगर को
खिलाया जाता था
कुछ ऐसा आसव भी था
जो खूनी कुत्तों को
बेगुनाह लाशों को चीरने से पूर्व
पिलाया जाता था ।
राम, कृष्ण, गौतम और गांधी
के नाम उस समय
भावों और कल्पना में मिलेंगे
तब शायद वह
यही कहेगा—
यहाँ एक अंधी सभ्यता का
उदय हुआ था ।

अंधेरे की साजिश के खिलाफ

आओ चलें !
अधेरे के उस पार
उजाले के द्वार पर
अलख जगाएँ
जिन्दगी की पुस्तक मे
भूत, भविष्य और वर्तमान के
पृष्ठों पर लिखे
अक्षर-अक्षर अनुभवों को
सपनो के देश बुलायें।
निराश होकर
बैठने से
मजिल नही मिलती
पाँव के तलुओ पर
जो छाले होते हैं
वे ही विश्वास बनते हैं
पीढ़ियो का
रास्ता खोलते हैं
इतिहास की सीढियो का
कांटो की चुभन से उपजी
रक्त की कविता गुनगुनाएँ
कुछ भी मिल सकता है
दुःख या सुख
कांटे या फूल

पर रोशनी की आस्था एक है
नाम चाहे कुछ भी हो,
गजल गीत या कविता
भावनाओं की टेक है
कदम दर कदम बढ़ाएँ।
आशा के तारे की
टिमटिमाती एक किरण
हरिण बन कर भागे,
इससे पहले
एक पत्र
अंधेरे की साजिश का लिखें
ज्योति के नाम
सूरज के घोड़ों की
लगाम थाम कर
तेज पुंज के स्वागत में
आरती का थाल सजाएँ।

पोर-पोर सपने

मन !
सपनों के मृगछौने को
खुला मत छोड़,
यह तुम्हारा सारा चैन चर जाएगा।
इस अनन्त आकाश में
पंख पसारने का मतलब
उन्मुक्त उड़ान भी हो सकता है
और एक भटकाव भी;
पर लक्ष्य भेदन से पूर्व
आवश्यक है दिशा का ज्ञान
क्योंकि अंधेरे के गर्भ से
उत्पन्न संकल्प
दृष्टि पथ में
रोशनी की
एक लकीर खींच देता है
और एक अकेले
सांध्यतारे का अकूत साहस
उसके पोर-पोर में
सुनहले सपने
सींच देता है।

प्रजातन्त्र

खाए कुत्ता
पीसे अंधी।
प्रजातन्त्र—
(जनता और सरकार के बीच)
आकर्षक किन्तु
दुर्भिसन्धि।

आत्म प्रवंचना

हर रोज
किसी नई खोज मे
मैं एक प्रतिज्ञा करता हूँ
(जीने के लिए)
हालाकि उसे पूर्ण करना
मेरे वश की बात नही
मेरी इतनी औकात नही
क्योकि गिरवी रख दिया था मुझे
पुरानी पीढियो ने
फिर भी
(सुविधा भोगी होकर)
प्रयत्न करता हूँ
उस ऊँचाई को छूने का
जिसे मेरा मूक बाप
कधो पर जिन्दगी ढोकर
आखिरी सास खोकर भी
नही छू सका था।

आज !
अपने ही हस्ताक्षरो से प्रवचित
मेरा दुर्भाग्य
कठघरे मे खडा है।
क्योकि आदमी का
बनाया हुआ कानून

आदमी से बड़ा है।

किसी अनहोनी सजा के
इन्तजार में, मैं
मृत्यु से पहले
कई बार मरता हूँ
और हर बार
फिर किसी नई खोज में
जीने का प्रयत्न करता हूँ।

महंगाई

महंगाई,
द्रोपदी के चीर की;
बढती हुई
लम्बाई।

देश भक्त

वे,
देश भक्तों की सूची मे
एक नाम
और भर्ती कर गए।
मन्त्री बन कर
कार मे आए थे
अर्थी पर गए !

राज नेता

जब भी वे
वहाँ से गुजरते है
रास्ते मे खड़ा पीपल का पेड
(जो धीरे-धीरे सूख रहा है)
उनका रास्ता रोक लेता है
और माँगने लगता है
एक-एक पत्ते का हिसाब
जो उड़े हैं
आँधी, तूफान
या बरसते पानी मे
उनकी निगरानी मे,
जिनका आज तक
कोई पता नही है।
वे शरीफ थे
और बदलते माहौल के साथ
समझौता नहीं कर सके
इसके सिवाय
उनकी कोई खता नही है।
वे बुदबुदाते हैं
एक नकली
फेहरिस्त दिखाते हैं
क्षमा माँगने की मुद्रा मे
उनके हाथ

अनायास जुड़ जाते हैं ।
धनुष बन जाती है
उनकी रीढ़
प्रत्यंचा तन जाती है
कुचालों की
बाण बन जाते है
आश्वासन !
धीरे-धीरे एक मंत्र पढ़ते हैं
'हरित क्रान्ति !'
'हरित शान्ति !'
पेट में सिहरन होती है
और तमाम आक्रोश
एक चापलूसी युक्त मुस्कान में
बदलकर
टाँय-टाँय फिस्स हो
बिखर जाता है
तथा उनका जन सेवक
कुछ और निखर जाता है ।

वर्ष का अन्त

समय की
सुराही से
एक बूंद जल
और रीत गया।
वर्ष बीत गया।

रिहर्सल

हम रोज-रोज
जीने की रिहर्सल
करते-करते जीते है
लेकिन जीना नही आता
इसलिए
मृत्यु का गरल पीते हैं।

शाम

शाम,
ढल गयी
उम्र के सांचे में
कुछ और धातु
गल गयी।

वे

वे कहते हैं—
'कविता मर चुकी है,
समाप्त हो गया है उसका युग'
मैं नहीं जानता
वे समीक्षक हैं, नेता हैं,
या सुधारक
लेकिन उनकी
अभय मुद्रा से स्पष्ट है
कि वे, कवि या कविता के विषय में
कुछ नहीं जानते हैं।
एक प्रभामण्डल है
उनके चारों ओर
जिसे देखकर
लोग चमत्कृत हैं
इसीलिए वे
जो कहते हैं
लोग मानते हैं
हालांकि उन्हें
कविता, भाव या समीक्षा से
कोई सरोकार नहीं
न ही कुछ युग से।
लेकिन यदि वे
ऐसा न करें

तो तुम उनके लिए
खतरा बन सकते हो।
क्योंकि तुम्हारे पास
पेट है, भूख है
और वह रसूक है
जो तुम्हारी कविता ने
पैदा किया है
जन-जन में
जिससे हजारों हाथ
उग आए हैं
तुम्हारे कंधों पर
विराट स्वरूप धारण करती हुई
तुम्हारी कविता का संघर्ष
कुछ और प्रबुद्ध हो गया है।
वे, जो कविता को
राज दरबार में
नृत्य के लिये पेश करते है
फिर ऐश करते हैं
कला के नाम पर
वे मानसिक रोगी है
या पथ भ्रष्ट योगी है
उनकी वज्रयानी साधना से
तुम्हे कोई मतलब नही है
वे वाणी को
मात्र विलास का साधन समझकर
कृच्छ साधना मे तल्लीन हैं
होश आने पर
रास्ते पर आ जायेंगे
क्योंकि कविता तो
मानव की चेतना है
वाणी के स्पर्श से वह
धन्य हो उठती है

जो कहते हैं—
'कविता मर चुकी है'
उनका तुम से या कविता से
कोई वास्ता नही है।
सच तो ये है कि
उनकी मानवता में भी
आस्था नही है!

मत बांधो आकाश

आप उनकी नींद में
शोर न बोएँ
अपनी पदचाप का।
वे बच्चे हैं
नौजवान या बूढ़े
जो भी हैं
उन्हें सपने देखने से
मत रोकें।
ऐसे समय में
जब कि वे भविष्य बुन रहे हैं, मत टोकें।
सपने देखना कोई बुरा नहीं
सच्चाई है जीवन की
इतिहास का रथ
इनके बीच से ही गुजरता है
इसलिये—
संगीनों के पहरे हटा लीजिये।
सपने
यथार्थ के तपते मरुस्थल में
ठण्डी हवा का झोंका है
युग-संधियों पर खड़े सपने
तुम्हें भविष्य के तोरण द्वार पर
प्रतीक्षा रत मिलेंगे।
उन्हें नजर अन्दाज करना

एक भयानक षड्यन्त्र है
भविष्य के खिलाफ
उन की अदालत में
तुम्हें स्वप्नहंता के रूप में
आना पड़ेगा।
और इतिहास
जब जवाब मांगेगा
तो एक-एक सपने का
हिसाब चुकाना पड़ेगा।

व्यूह भेदें

भीड़ ! भीड़ ! भीड़ !
और एक चेहरा
तुम्हारा ? या कि मेरा
ढूँढना फर्ज है
वैसे पुरानी पीढ़ियों का
दिया काफी क़र्ज़ है
चुकाएँ न चुकाएँ
विचार शून्य नही हैं
सभी दिशाएँ
बढ़ें अँधेरे मे
टटोलें दृष्टि कोण
चढ़ें
गिरकर टूटें
शायद उखाड़ ही दें
पुराने खूँटे
मरना !
इतना बुरा नही है
जितना खुद के विरुद्ध
स्थिति स्वीकार करना।
व्यूह भेदें, मरें !
चुनौती तो दें,
कुछ तो करें !

वर्तमान के विषधर

तुम
एक उधार दी हुई जिंदगी
अपने कंधों पर ढो रहे हो
और आदमी न रहकर
आदमी का फ़र्ज़ हो रहे हो
तुम्हारा भाग्य और कर्म
निश्चित् कर दिए गए हैं
तुम्हारे नियामकों द्वारा
उनकी मर्जी के खिलाफ
न तुम कुछ बन सकते हो
न ही कुछ कर सकते हो
वर्तमान के विषधर
तुम्हें धीरे-धीरे लील रहे हैं
और एक के बाद एक मनचेता
तुम्हें शब्दों से कील रहे हैं
आक्रोश में उठा हुआ हाथ
या गले में सूखा हुआ
तुम्हारा शाप
सब उनके द्वारा निर्देशित है
विवश और वेतनानुचर
कठपुतली बन रहे हो तुम
मरने होने का
या स्व को खोने का

तुम्हें कोई आभास नहीं है
तुम्हारे पैरों तले जमीन
और सर पर आकाश नहीं है
अधर में झूलते हुये तुम
जिन्दगी का जहर
घूंट-घूंट पी रहे हो
और गिरवी रखी हुई
एक उम्र को
मजबूरन जी रहे हो।

अन्त

गल चुकी है
इस मकान की नींव
दीवारों में
दरारें पड़ चुकी हैं
चटक गए हैं
खिड़कियों के शीशे
परन्तु फिर भी
मौन हैं
इसमें बैठने वाले
वे ठाले
नहीं जानते
कि छत में
छेद हो चुके हैं यत्र-तत्र
जिनमें से चू रहे हैं छींटे
सिहर उठते हैं सभी
एक साधारण झोंके से
सब का विश्वास
और आकांक्षाएँ
मर चुकी हैं
फिर भी कैसे जिन्दा हैं ये लोग ?
समझ में नहीं आता . .
शायद यही अन्त है !

जो

जो लोग
दौड़ मे पीछे रह गए थे
उन मे, तुम भी हो सकते हो
यह बात दूसरी है
कि तुमने कभी
इस ढंग से सोचा ही न हो
कि जिस मुकाबले मे
तुम शरीक हो
तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी
बाजी मार रहा है
तुमसे
कुछ कहते नही बनता
तुम शायद यह नही जानते
कि तुम उन लोगो मे से हो
जो उन सडको का निर्माण करते हैं
जिन पर से
इतिहास का रथ गुजरना है
अब इसके पहियो से
मत उलझो
क्योकि नीव की ईंट का भी
इतिहास बने
यह कतई जरूरी नही
लेकिन उस पर

जो भवन खड़ा होता है
उसके सौन्दर्य की
पृष्ठ भूमि में
उसकी नींव का महत्त्व
बड़ा होता है।
इसलिए तुम्हें अब
सावधान हो जाना चाहिए
ताकि समय चक्र के
साथ चल सको
और वक्त आने पर
इतिहास भी बदल सको
क्योंकि तुम उन से
अलग नहीं हो
जो इतिहास बदलते हैं
कांटों पर भी मचलते हैं जिनके पाँव
वे तुम हो!
तुम हो!!

मैं और मेरी कविता

मैं और मेरी कविता
जब तक
एक दूसरे के पर्याय थे
हम किसी परिचय के
मोहताज नहीं थे
तब हमारा सहारा
बैसाखियों से युक्त
अलफ़ाज नहीं थे
अलफ़ाज यानी शब्द—
जो शूल बन सकते थे
फूल या मरहम भी,
अकड़ोडियों की रुई की तरह
वातावरण में बिखर कर
हवा के हाथ का खिलौना
बन गए हैं
बिछौना बन गए हैं
किसी अम्यागत की बैठक का।
शब्द—
जिनमें चमक थी
दमक थी, नई रोशनी की
आज उनका मुलम्मा छूट गया है
तुम्हारे कानों तक पहुँचने से पहले
अर्थ से उनका रिश्ता टूट गया है।

इसलिये !
हाँ इसलिये
तुम पर इन कीले हुए शब्दों का
असर नहीं हो सकता
और कविता के सहारे
मेरा भी असर नहीं हो सकता।
मैं समझता हूँ
यह अनायास नहीं हुआ
सोच समझ कर की गई
एक साजिश थी
मेरे और मेरी कविता के विरुद्ध
उन शुद्ध शब्दों के विरुद्ध
जो मेरे और तुम्हारे बीच
पुल थे।
इसे दुर्घटना समझकर
अब और नहीं टाला जा सकता
कि कविता महज़ शब्दों का मेल है
यह भ्रम
अब और नहीं पाला जा सकता।
कविता को
हथियार बनाने से पहले
शब्दों की धार
माँजनी होगी।
जिसमें अर्थवत्ता बंद है
उस तिलस्म को तोड़ना होगा,
और कविता की धारा को
जहाँ जन-जन की प्यास
आग लगाए बैठी है
उस ओर मोड़ना होगा

सड़क पर आम आदमी

उस दिन जो आदमी
ट्रक की चपेट मे आ गया था
जिसे काल का क्रूर जबड़ा
असमय ही चबा गया था
लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ—
कि उसके सीने में
एक धड़कता हुआ दिल था
जेब मे मैडिकल बिल था
जिसे वह पास करवाना चाहता था
ताकि अपनी बीमार पत्नी का
(जो टी. बी. की मरीज थी)
इलाज जारी रख सके
लेकिन उससे पहले
वह स्वयं खुदा को प्यारा हो गया
पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट के अनुसार
उसकी मौत
हृदय गति रुकने से हुई
उसका पेट खाली था
किसी दफ्तर में चपरासी था वह
अपनी ड्यूटी के बाद
साहब के घरेलू कामो से फुर्सत पाकर
कोई और धन्धा करता था
इस प्रकार

अपने तीन बच्चों, बीमार पत्नी
बूढ़े और असहाय माँ-बाप का
पेट भरता था
वह कभी भी
कोई भी काम
नहीं टालता था
जैसे भी बने
अपना परिवार पालता था
चुनाव के दिनों में वह
पोस्टर चिपकाने से लेकर
पार्टियों के झण्डे उठाने तक
आगे रहता था
गजब का आत्मविश्वास था उसमें
बला की फुर्ती थी
लेकिन बार-बार
उसका यह विश्वास चटक जाता था
क्योंकि वोट देने के बाद
उसका पेट घुटनों तक लटक जाता था
विश्वास करना उसकी मजबूरी थी
धोखा खाना नियति
दुःख सहना आदत
सुख स्वप्न
और जीवन !
मौत तक पहुँचने का साधन !
जुलूस की भीड़ बनने के लिए
वह विवश था
क्योंकि फुटपाथों का इतिहास
उसकी जुबान से अधिक
उसकी रीढ़ और तलुओं को ज्ञात था।
उसकी आँखों में अब
आशा और प्रतीक्षा की बजाय
प्रतिहिंसा पैदा होने लगी थी।

जो वातावरण
प्रदूषित करने वालों को देखकर जगी थी।
अच्छा हुआ, वह मर गया
वरना उसे सजा मिलनी थी
क्योंकि उसे
स्थितियों को चुपचाप झेलने का
मर्ज था।
और पुलिस रिकार्ड में
उसके खिलाफ
आत्महत्या का मामला दर्ज था।

विभाजित

उस दिन जब मुझे
ईमानदारी के दर्द का
अहसास हुआ था
तो पहली बार
आभास हुआ था
कि मैं एक पिटा हुआ प्यादा
शतरंज की इस बिसात पर
अभिनय कर रहा हूँ जीने का
क्योंकि विद्रोह कर रहा है
मेरा अंग-अंग
अपने ही शरीर से
पाँव किसी के
जुलूस की शोभा बढ़ा रहे हैं
अर्घ्य चढ़ा रहे हैं
मेरे हाथ
उनके विजयी व्यक्तित्व के सम्मुख
माथा झुक रहा है सजदे में
पलक पाँवड़े बिछ गए हैं अपने आप
उनके स्वागत में
अब क्या करूँ ?
चीखूँ ?
या उनके लिए

अलंकारमयी भाषा सीखूं ?
लेकिन इतना आसान नहीं हैं
निर्णय लेना
सिर्फ अपनी चेतना को
महत्त्व देना
उन विद्रोही अंगों का
तिरस्कार है
जो शरीर के लिये
चेतना के बराबर
भागीदार है ।

आज के बाद

अब मैं अपने लिये
एक चेहरा
ढूंढना चाहता हूं
क्योंकि मुट्ठियों के पसीने की
कसमसाहट में बंद
मेरा विद्रोह
तलाश कर रहा है
किसी विकल्प की।
इसलिए
अब यह नितान्त आवश्यक हो गया है
कि पहले मैं
अपने कंधों से
इस जुए को गिराऊं
फिर अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ
उन हथियारों को आजमाऊं
जो कारगर हो सकते हैं
तुम्हारे मकड़ जाल को
काटने के लिये
क्योंकि तुम्हारे पास
केवल आश्वासन और नारे ही बचे हैं
बांटने के लिये।
इसलिये मैं
वातावरण में अब अपनी

सही चेहरे की तलाश में
आज के बाद
तुम्हारी दी हुई
संज्ञाएँ नही ढोऊंगा।
विवशताएँ नही बोऊँगा,

रामचन्द्र सपने बेचता है

कचहरी के आगे
अपने पोथी-पतरे फैलाये
रामचन्द्र सपने बेचता है।
इस अदालत के ऊपर
एक और भी अदालत है
यह सोचकर कोई भी आदमी
जब उस के पास आता है
तो रामचन्द्र उसे
सिंह की राशि पर
शनि का प्रभाव बतलाता है,
केतु कष्ट कारक है
राहु दसवें में बैठा
चन्द्रमा को बरगलाता है।
और रामचन्द्र कहता है—
शनि शमन के लिए जाप
और राहु की शान्ति के लिये
दान जरूरी है
इसलिये इक्कीस रुपये,
दो गज कपड़ा
और अढ़ाई सेर धान जरूरी है
दान और जाप से
सब सही हो जायेगा
शायद

एक अंगड़ाई लेकर जागेगा
और शनि का साढे साती ढैय्या
रातो-रात
मैदान छोड़कर भागेगा।
रामचन्द्र की कमजोर आँखे
ग्राहक की हथेली पर
उसकी जेबें टटोलती हैं
और उसकी ज्योतिष
सदा ग्राहक की हैसियत वाली
भाषा बोलती है।
उस की फीस का ग्राफ
तब तक नीचे गिरता जाता है
जब तक सौदा पट नहीं जाता
इस तरह
कुछ आशाएँ भविष्य की
आश्वासन वर्तमान के देकर
रामचन्द्र ग्राहक को भेजता है।
रामचन्द्र सपने बेचता है।

रामचन्द्र सपने बेचता है
चाहे वह रिक्शेवाला रमजान हो
चाहे बतासिंह खलासी
तांगे वाला तनसुख हो
या कालू राम चपरासी
सब के सब उस के मुरीद हैं
क्योंकि उस की गणनाएँ
उनकी अभाव जन्य हताशा को
तोड़ती है
और सपनों की सड़क
उनके वर्तमान को
सीधा भविष्य से जोड़ती है
उन के चेहरे पर

रामचन्द्र अपने अभाव पढ़ता है
और अभावों के विस्तार से ही
उनके सवालों के जवाब गढ़ता है।
ग्राहक को दी गई
खुशफ़हमियों के बदले
रामचन्द्र जो सिक्के लेता है
उन से वह
दो जून रोटी
और बच्चों की नींद खरीदता है
रामचन्द्र जानता है
कि सितारों की चाल
रेखाओं का गणित
और ग्रह नक्षत्रों का हाल
एक खुशफ़हम अनुमान के सिवा
कुछ भी नहीं है।
लेकिन रामचन्द्र यह भी जानता है
कि आदमी भविष्य के प्रति भीरु है
इसलिये सुरक्षा चाहता है
सपने खरीदना उसके लिये
अपने भविष्य के प्रति
आश्वस्त होना है।
और रामचन्द्र को
सपने बेच-बेचकर
ज़िन्दगी का बोझ ढोना है।

आँधी और पेड़

जब जंगल में कहीं भी
चिंगारी फूट रही हो
तब तुम्हारा नदी के किनारे
चुपचाप खड़े रहना
तटस्थता नहीं कहा जा सकता
ऐसे में जब चारों ओर से
ज्वालाओं के उमड़ने का भय हो
और जंगल की अस्मिता ही
खतरे में पड़ जाना तय हो
तब केवल अपना बचाव सोचना
कोई बुद्धिमानी नहीं है
क्योंकि आग—
चाहे चिता की हो या दंगे की
घर की हो या जंगल की
पेट की हो या जिस्म की
वह चाहे किसी नव वधू की
विवशता से ही फूटी हो
जलाना उसका धर्म है
और उसे बुझाने की
कोशिश करना तुम्हारा कर्म है।
लेकिन तुम उस क्षण को
लगातार टाल रहे हो
यह जाने बिना

कि ऐसा करके
तुम अपने भविष्य के लिये
अंधेरा पाल रहे हो
क्योंकि हवा जब
चाकू की तरह तनी हो
और आतंक हर टहनी को
अपने बर्छे से नापता हो
तो वृक्ष होना
खतरे से बाहर नही है
ऐसे मे तुम्हारी निष्क्रियता को
जब आँधियाँ भी
आन्दोलित नही कर सकती
तथा तने मे आस्था नहीं भर सकती
तो तुम्हारी ही टहनियाँ
अपनी रगड़ से
उस आग को बेबाक कर देगी
और तुम्हारे अस्तित्व को
जलाकर राख कर देंगी
इसलिये उन आँधियों को रोको
जो पहले तुम्हें दुलारती हैं
बाद मे भीतर की आग को उभारती हैं।

देवीदयाल सब कुछ जानता है

साहब के दफ्तर के आगे
स्टूल पर बैठा देवीदयाल
बिना कहे-सुने ही
जान लेता है
सबके दिलों का हाल
साहब के साथ हँस-हँसकर
बातें करता हुआ मोटा लाला,
जल्दी-जल्दी अगुलियाँ चलाता टाइपिस्ट
हिसाब जोड़ता हुआ अकाउटेंट
तथा मुस्कराता हुआ बड़ा बाबू
जो फाइलों में खो रहा है
इन सब को देख कर
देवीदयाल समझ जाता है
कि कुछ गलत हो रहा है

जब साहब के घर
तीसरा फूल खिला था
तब भी ठेका
इसी लाला को मिला था
इस बार ठेका
पचास लाख का है
लाला का बेड़ा
पार हो जायेगा

साथ ही साथ
साहब का
राजधानी वाला बंगला भी
तैयार हो जायेगा।
लेकिन देवीदयाल के
घर की छत
इस बार भी नहीं बदली जा सकेगी
क्योंकि महगाई का सूचकांक
जब भी ऊपर चढ़ता है
तो देवीदयाल के
चश्मे का नम्बर बढ़ता है।
इसलिये—
पैंतालीस बरस की उम्र में
कई चश्मे बदल चुका है
फिर भी महगाई का बढ़ना
और चश्मे के नम्बरों का गिरना
जारी है
देवीदयाल जानता है
कि कुछ गलत हो रहा है
एक बूढ़े की पेंशन का केस
पिछले पांच सालों से लटक रहा है
और दूसरा बूढ़ा
अपने जवान बेटे की
मौत के बाद
उस की ग्रेच्युटी लेने के लिये
दर-दर भटक रहा है।
इस बुढ़िया का खेत
पटवारी ने नीलाम कर दिया है
और उस विधवा का
शोर के मरघट ने
जीना हराम कर दिया है।
लेकिन इनकी कौन सुने ?

इनकी दरख्वास्तों पर
वज़न नहीं है।
इसलिये बार-बार उड़ जाती हैं—
और साहब की दयादृष्टि
सहानुभूति के बावजूद
दूसरी ओर मुड़ जाती है।
देवीदयाल चिन्तित है
दु.खी है
इसलिये रो रहा है।
क्योंकि वह जानता है
कि कुछ गलत हो रहा है।
देवीदयाल जानता है
कि सबके अपने-अपने स्वार्थ हैं
अपने-अपने धन्धे हैं
इसलिये लोग
कान होते हुये भी बहरे
और आँखें होते हुए भी अन्धे हैं
यदि कानो के लिए
केवल अपनी प्रशंसा सुनना
और आँखो के लिये
अपना स्वार्थ देखना ही
परम सुख है
तो देवीदयाल कहता है
उसे अपनी दृष्टि
खो जाने का क्या दु.ख है!
फिर भी उसका दिल नही मानता
इसलिये नाहक
दूसरो का दर्द ढो रहा है।
क्योंकि देवीदयाल जानता है
कि कुछ ग़लत हो रहा है।

आदमी और दीवार

एक आदमी
बगावत का पोस्टर लिये
दीवार के पास खड़ा है,
यह आदमी
सही मायने में
अपने कद से बड़ा है।
उसकी आँखों में
एक जंगल उग आया है,
जिसके तमाम रास्ते
उसने पार कर लिये हैं।
उसके कदमों में अब
भटकाव की जगह
विश्वास की झलक है
अब एक ऊँचाई तक
दीवार उसके साथ है
जहाँ उसका आक्रोश
और तनी हुई मुट्ठी
हर कोई देख सकता है।
क्रान्ति की जलती हुई मशाल
थामने के लिये
उसके हजार-हजार हाथ हैं।
ये हाथ ही
वर्तमान के पृष्ठ पर

भविष्य का इतिहास बनाते है ।
और उसकी प्रबल धारा से
दुर्दंर्ष संघर्ष करते हुये
उत्सव मनाते हैं ।
क्योंकि दीवार जब
आदमी के संघर्ष से जुड़ जाती है
तब तमाम पुरातन मान्यतायें
नये युग की ओर मुड़ जाती है ।

किताबें

कुछ लोग
सजिल्द इश्तिहार फेंक कर
चले गये हैं
लोगों के बीच।
जिन्हें लोग पढ़ रहे हैं
पढ़ रहे हैं और चिमगोइयाँ कर रहे हैं
पढ़ रहे हैं और वहम में उलझे हैं
पढ़ रहे हैं और प्रसन्न हो रहे हैं
पढ़ रहे हैं और होश खो रहे हैं
जबकि किताबें
आज भी बन्द हैं
अलमारियों और तहखानों में
तमाम सड़न और सीलन को
अपनी कमजोर और
लगभग फटने को आतुर
जिल्दों को सम्हालती हुई

किताबें—
आज भी उत्सुक हैं
स्वतन्त्र होने को
स्वच्छन्दता बाँटने को
किसी किसी शहीद की
यादगार की शक्ल में

तो कही किसी
क्रान्तिकारी की शक्ल में
सीखचों के पीछे
अपनी बुलन्द और दमदार
आवाज को
लोगो की आवाज बनाने के लिये।
इतिहास कोई किताब नही है
बल्कि लोगो के रक्त का
वह हिस्सा है
जो अपनी स्मृतियों मे
तमाम दुःख-दर्द समेटे
वर्तमान को अपनी
उजाड़ आंखो से देखता हुआ
एक मौन को मुखर कर रहा है।
इसलिये इतिहास को
किताब कहना
या किताब का इतिहास ढूढ़ना
बेमानी है
क्योंकि जब भी
विचारो के स्रोत उमड़े हैं
तो एक कठोर पाषाण खड को भी
किताब बनना पड़ा है
जिस पर
श्रमिक के कर्मठ हाथों ने
अपने हथौड़े से
एक-एक शब्द जड़ा है।

किताबें—
आज भी उनकी अलमारियों में
बन्द पडी हैं
अपनी अन्तिम लड़ाई के लिये

गरा बोधो शाकाश

तैयार होती हुई
उनकी कैद से
मुक्त होने को आतुर है।